BA-II
मैथिली प्रतिष्ठा
पहिल पत्र

Lecture - 2

प्रो० संजीत कुमार साह
(अतिथि सहायक प्राध्यापक)
मैथिली विभाग
M.S.J. College, Rajnagar
Madhubani (Bihar)

जीवनझाक नाटक :- जीवन झा सामाजिक १८९४ ई० नाटक लिखलनि। जीवन झा 'सुन्दर संयोग' नाटक ई सामाजिक नाटक अछि। ई नाटक चारि अंकमे विभक्त अछि। प्रारम्भमे प्रस्तावना अछि जाहिमे नटी आ सूत्रधार बीच-बीचमे नाटकक विषयवस्तुपर प्रकाश देल अछि। नाटकक अन्त भरतवाक्यसँ स्वागत - गायन सेहो अछि। नाटकक अन्त भरतवाक्यसँ होइत अछि।

एहि नाटकक सुन्दर मिश्र विकाइ तथा नायिका किशोरि सरला। सुन्दर पण्डित छलाह। विवाहक प्रति सरला सुखतामे भऽ गेलीह। चतुर्थीक बाद सुन्दर सासुरसँ बिदा भऽ ~~कोलीह~~ गेलाह। वैद्यनाथधामक ठेठ वर्ष चारि अनुष्ठान कयलाक बाद जखन ओ गाम घुरिकऽ आबि रहलाह तखनहि हुनक पत्नी, सासु आ सासुरक आन लोक ओतऽ अबैत गेलीह तथा जाही पड़ाक ओतऽ ओ आतंकित छलाह तनिके ओतऽ आहलादित देलनि। सासुरक लोक हुनका चिन्हलकनि नहि, कुल आ घरि, हुनका मिलक

(2)

परिवेश कुशलतापूर्वक चित्रित भेल अछि । शोषणात्मक वृत्ति मे दहेजक मोन खराब भऽ गेलापर ओतऽ कुन्दन ओतऽ रमा कथ्यलनि बाबूजी चिन्ता परिवेश भेलापर पति-पत्नि कुन्दन वियोग भेलनि । एकर महत्व प्रसंग डॉ० जयकान्त मिश्र कहैत छथि — "while characterization is selender, the sizing of a situation which is true to the life of the Mithila people is a remarkable feature of this drama." ई मैथिलीक प्रथम मौलिक सामाजिक नाटक थिक । एकर सम भाषा मैथिली गद्यकेँ तराशि-चमकाउ देलक ।

<u>सामवती - पुनर्जन्म</u>: एकरा किछु गोटे पं० अम्बिकादत्त व्यासक 'सामवत' नाटकक अनुवाद मानैत छथि, किन्तु डॉ० रामदेव झाक अनुसार "केवल मूलकथा वस्तुक मूल, किछु पात्र, किछु घटना, किछु संवादक सारूप्य आधार पर सामवती पुनर्जन्म नाटककेँ सामवत नाटकक अनुवाद मानि लेब अनुचित होयत ।" ई नाटक 7 अंकमे विभाजित अछि । एहू नाटकमे नेदी, सूत्रधार तथा भरतवाक्य अछि । बीच-बीच मे पद्य ओ गीतक प्रयोग भेल अछि ।

[signature]
08/09/20